Volume-3, Issue-1, Oct.-Dec., 2014

CHHAVI

Chhavi National Journal of Higher Education

National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319 - 9679

REFEREED

JANUARY, 2015

Shubham

Education and Information Centre

Dr. Rajendra Shrimali *(Editor in Chief)*

9414742973, 7790978966, 9413471252

Shubham Education and Information Centre

ई–लर्निंग : प्रभावशाली व्यूह रचना एवं चुनौतियां

डॉ. गिरिराज भोजक
सहायक आचार्य
शिक्षा संकाय, जै.वि.भा.विश्वविद्यालय, लाडनूं

वर्तमान युग विज्ञान का युग है तथा वैज्ञानिक आविष्कारों ने विश्व के सभी आयामों को पूर्णतः या अंशतः प्रभावित किया है जिनमें चिकित्सा, परिवहन, तकनीकी, उत्पादन, खाद्य सामग्री आदि प्रमुख है। शिक्षा का सम्पूर्ण क्षेत्र भी इस तकनीकी विकास से अछूता नहीं है। सम्पूर्ण वैश्विक परिदृश्य में आज दो क्रांतिकारी घटक मानवीय क्रियाकलापों को इस हद तक प्रभावित कर रहे है कि उनकी अनुपस्थिति में विकास की कल्पना नहीं की जा सकती वे घटक हैं – वैश्वीकरण एवं टैलीमैटिक्स (कम्प्यूटर द्वारा जुड़ी नेटवर्किंग) कम्प्यूटरीकरण के बाद इंटरनेट का प्रयोग एक ऐसी क्रांतिकारी घटना कही जा सकता है जिसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व सूचनाओं के परिप्रेक्ष्य में एक 'शैक्षिक गांव के रूप में बदलता जा रहा है। ईंटरनेट ने शिक्षा के क्षेत्र में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी (ICT) के माध्यम से अनेक स्वर्णिम अध्याय जोड़े हैं –

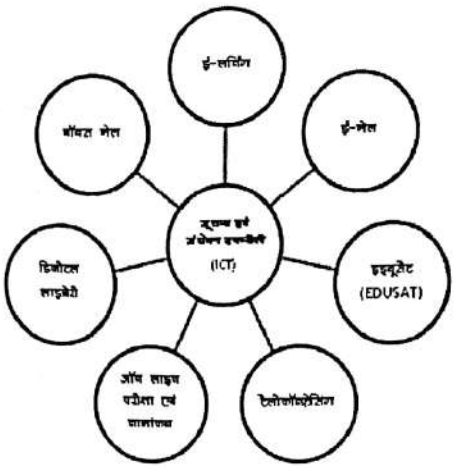

एक ऐसा ही महत्वपूर्ण आयाम है ई–लर्निंग जिसके द्वारा पाठ्यवस्तु (Content) को इंटरनेट व मल्टीमीडिया उपकरणों की सहायता से विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं आमजन हेतु ऑन लाइन उपलब्ध करवाया जाता है जिसे कोई अधिगमार्थी समय एवं स्थान की सीमाओं से परे कहीं भी ग्रहण कर सकता है।

ई–लर्निंग के द्वारा शिक्षा के संरचनात्मक ढांचे में अग्रलिखित परिवर्तन जारी है तथा भविष्य की संभावनायें कुछ इस प्रकार होगी –

1. विद्यालय की भूमिका में परिवर्तन : 20वीं शताब्दी तक निश्चित पाठ्यक्रम, निश्चित समय एवं निर्धारित मूल्यांकन के स्थान पर एक Support System के रूप में विद्यालयों की भूमिका।
2. स्टेशनरी रहित शिक्षण व अधिगम
3. वैश्विक समुदाय में घटित नवाचारों की सुलभ प्राप्ति
4. संबंधित विषयवस्तु का विविधतापूर्ण स्वरूप एवं विस्तृत सूचनाएं
5. एक ही छत के नीचे अनेक समस्याओं का समाधान (विद्यार्थी एवं शोधार्थी)
6. पाठ्यपस्तकों, जर्नल्स, शैक्षिक पत्र–पत्रिकाओं आदि पर होने वाले व्यय में कमी
7. बहुसंख्यक विद्यार्थी समुदाय का सामूहिक अनुदेशन व शिक्षण
8. विविध शैक्षिक संगठनों, विशिष्ट जनों, पुस्तकालयों से टेलीकॉन्फ्रेंसिंग द्वारा सीधा सम्पर्क
9. संबंधित सूचनाओं, तथ्यों एवं दत्तों का सरल स्थानान्तरण एवं संग्रहण
10. जिज्ञासु विद्यार्थियों हेतु परामर्श के अधिक अवसर उपलब्ध

उपर्युक्त वर्णित महत्वपूर्ण परिवर्तनों एवं लाभप्रद परिस्थितियों के प्रकाश में ई–लर्निंग एक बहुउपयोगी, सुससज्जित एवं परिष्कृत प्रणाली है जिसका लाभ शिक्षा से